लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

10वाँ संस्करण

हिंदी पखवाड़ा समारोह विशेषांक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,मुंबई

सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स

बांद्रा(पूर्व),मुंबई - 400 051

ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सी एम साने

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री मो. फैजान नय्यर - निदेशक/तेल

श्री अविनाश जाधव - निदेशक

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती मीना देशप्रभु	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती कल्पना असगेकर	**पर्यवेक्षक**
श्री आनंद कुमार सिंह	**कनिष्ठ अनुवादक**

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है- संपादक-मंडल)

सत्यमेव जयते
हिंदी दिवस 2022
के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

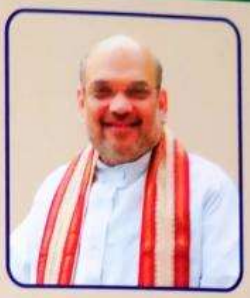

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

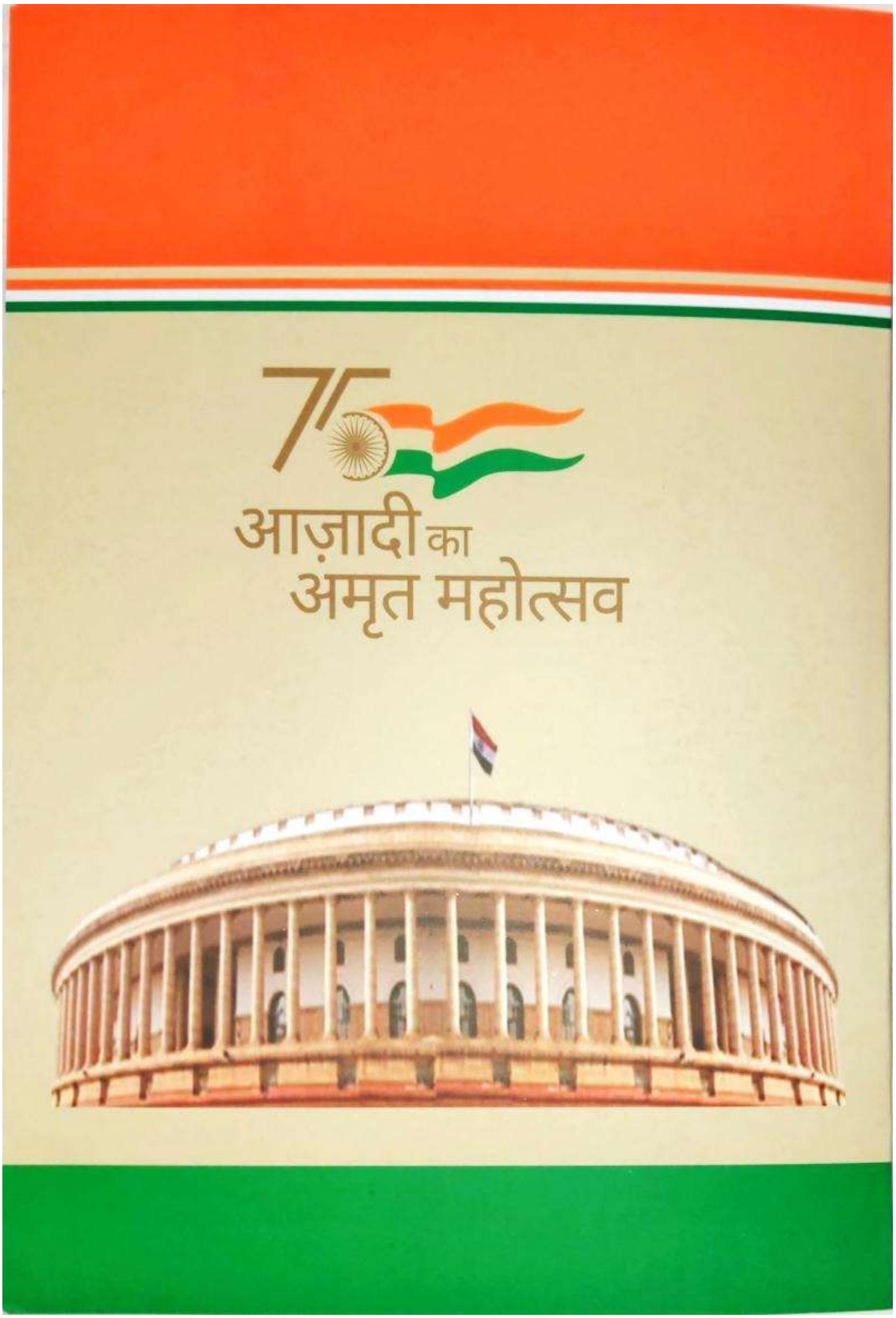
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

अनुक्रमणिका

संदेश	श्री सी एम साने, महानिदेशक
संदेश	श्री मो. फैजान नय्यर, निदेशक/तेल
संदेश	श्री अविनाश जाधव, निदेशक
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	श्री आनंद कुमार सिंह
मेरी सहेली का नामकरण	सुश्री वी. सरला
मराठा साम्राज्य	श्री संजय कोटलगी
अहंकार	श्री आनंद कुमार सिंह
द्वंद	श्री इमरान खाटीक
शिरीष कुमार मेहता	श्री शरद धनगर
मुंबई की लोकल ट्रेन	श्री रवि कुमार
डायनासोर काल	श्री नीरज कुमार
पर्यावरण	श्री हरीश कुमार
हिंदी पखवाड़ा आयोजन	
राजभाषा संबंधी जानकारी	
आपके पत्र	
राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य	

संदेश

यह सुखद अनुभूति का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाओं के माध्यम से एक कार्यालय के कार्मिकों के विचार दूसरे कार्यालय के कार्मिकों तक पहुंचते है। इस प्रकार विचारों का आदान-प्रदान ज्ञान के स्तर को बढ़ाता है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास की दिशा में किए गए कार्यों की जानकारी दूसरे कार्यालयों को प्राप्त होती है जिससे राजभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु गति प्रदान करती हैं।

राजभाषा हिंदी में कार्य करना अत्यंत गौरव की बात है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति प्रोत्साहित करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है। कार्यालय में उचित वातावरण होना चाहिए जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन मिल सके। कार्यालय के काम-काज में हिंदी के सरल एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने से कार्मिकों की राजभाषा में कार्य करने का उत्साह बढ़ता है। इलेक्ट्रानिक साधनों ने हिंदी के प्रयोग को सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आवश्यकता के अनुसार इलेक्ट्रानिक साधनों का प्रयोग करने के लिए कार्मिकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

वे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी धन्यवाद के पात्र है जिनके सहयोग से पत्रिका के 10वें अंक को पूर्ण करने का कार्य सफल हुआ है। प्राप्त रचनाओं को सुंदर तरीके से प्रस्तुत करने हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान देते हुए उपयोगी सिद्ध होगा।

(सी एम साने)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय की राजभाषा के विकास में योगदान को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों में हिंदी पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाना हमारा संवैधानिक दायित्व है। हिंदी पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रुचि जागृत करती है तथा हिंदी प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करती है। पत्रिका से कार्मिकों के अंदर सृजनात्मकता का विकास होता है। कार्मिकों द्वारा अपने पद के उत्तरदायित्वों का उचित रूप से निर्वाह करते हुए पत्रिका हेतु लेख प्रस्तुत करना अत्यंत सराहनीय है जो उनके राजभाषा के प्रति रुचि को दिखाता है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(मो. फैजान नय्यर)

निदेशक/तेल

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए बढ़ावा देने हेतु त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। पत्रिकाएं कार्यालय के कार्मिकों में राजभाषा में रचना-कौशल विकसित करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करती हैं।

हिंदी को संविधान द्वारा भारत की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक में राजभाषा के प्रयोग एवं इसे विकसित करने से संबंधित प्रावधान हैं। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह कहा गया है कि भारत के संघ का कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रचार एवं उत्थान करें। अतः केंद्र सरकार के कर्मचारियों का दायित्व है कि वह हिंदी के विकास हेतु यथासंभव प्रयास करें। राजभाषा हिंदी संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे हिंदी के प्रति रुचि जागृत हो।

पत्रिका के लिए सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

इस आशा के साथ पत्रिका का यह अंक आप सभी के लिए प्रस्तुत करता हूँ कि इसे पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाओं से हमारा उत्साह बढ़ाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।

(अविनाश जाधव)

निदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के दसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने में अपने उद्देश्य के प्रति प्रयत्नशील है। कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु पत्रिका की भूमिका अत्यंत सराहनीय है। कार्यालय द्वारा किया जा रहा प्रयास सराहनीय है। आशा करता हूँ कि सदैव यह प्रयास जारी रहेगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशनार्थ संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)

उपनिदेशक

उप-कार्यालय निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संपादकीय

राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने तथा राजभाषा के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य की दिशा में एक प्रयास के रूप में त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 10वां संस्करण आपके समक्ष सादर प्रस्तुत है। पत्रिका में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं को सुंदर तरीके से प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। पत्रिका के माध्यम से कार्मिकों की रचना-कौशल को प्रदर्शित किया गया है। पत्रिका के इस अंक में विविध विषयों पर आधारित रचनाओं को शामिल किया गया है। पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान देने हेतु एक रुचिकर माध्यम है।

हिंदी पूरे भारत में बोली जाने वाली तथा समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जिस प्रकार बोला जाता है, उसी प्रकार लिखा भी जाता है। आज के समय में इलेक्ट्रानिक साधनों के प्रयोग से हिंदी का प्रयोग आसानी से किया जा सकता है। हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने हेतु पत्रिका प्रकाशन एक सार्थक माध्यम है। पत्रिका कार्मिकों में रचना कौशल को विकसित करते हुए प्रोत्साहित करने का कार्य करती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सादर धन्यवाद। हम आशा करते है कि विगत अंकों की भांति पत्रिका का यह अंक भी आपको पसंद आएगा तथा आगामी अंको के लिए भी आपका मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं सहयोग मिलता रहेगा।

आप सभी से सादर अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएं तथा अपने मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन से हमारा उत्साहवर्धन करें।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री वी सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी सहेली का नामकरण

एक मज़ेदार किस्सा सुनो

मेरी सहेली के नामकरण की।

है यह बिलकुल सच्ची घटना

मेरी सहेली के नामकरण की।

लिया जनम मेरी सहेली ने

बंगाल के छोटे से एक गांव में,

श्रावण के शुभ महीने में ।

थी पहली संतान अपने माता पिता की

बनी राज दुलारी नाना नानी और दादा दादी की

थी बड़ी उत्साह परिवार में, लेकर मेरी सहेली के नामकरण की ।

कोई कहता श्रावणी होगा इसका नाम, कोई कहता कोकिला, और कोई मंजुला ।

न हो पाया समझौता कन्या के नाम का ।

और बीत गए वर्ष चार देखते देखते बिना नामकरण के ।

बुलाने लगे मेरी सहेली को अनेक नामो से

कोई बुलाता गुड़िया, कोई सोना और कोई टुम्पा ।

आखिर पाठशाला में दाखिला का वह दिन आया

थाम कर हाथ पिता का चली टुम्पा करवाने दाखिला पाठशाला में ।

अध्यापक ने पूछा पिता से क्या है तुम्हारी गुड़िया का नाम?

सुनकर यह सवाल सोच में पड़ गया पिता

बताए क्या नाम जब हुआ नहीं नामकरण गुड़िया का?

अध्यापक ने फिर पूछा उच्च स्वर में

किन स्वप्नों में खोए हो महोदय !

बताओ क्या लिखे आपकी बिटिया का नाम ?

सुनकर अध्यापक की बात

चमक उठी पिता की आँखें

मुस्कुराते बोले 'स्वप्ना' है मेरी गुड़िया का नाम।

अध्यापक ने बड़े सुन्दर अक्षर में

पुस्तिका में लिखा, 'स्वप्ना' नाम गुड़िया का।

और इस तरह से हुआ नामकरण मेरी सहेली स्वप्ना' का!!!

****

श्री संजय कोटलगी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मराठा साम्राज्य

मराठा साम्राज्य का प्रारंभ वर्ष 1674 से छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के साथ हुआ। साम्राज्य की स्थापना का श्रेय 'शाहजी भोंसले' तथा पुत्र 'शिवाजी' को है। कुछ समय तक शाहजी ने मुग़लों को चुनौती दी। अहमदनगर में उनका काफी प्रभाव था। वर्ष 1636 की संधि के अंतर्गत शाहजी को उन क्षेत्रों को छोड़ना पड़ा, जिन पर उसका प्रभाव था। उन्होंने बीजापुर के शासक की सेवा में प्रवेश किया और अपना ध्यान कर्नाटक की ओर लगाया। उस समय की अशांत स्थिति का लाभ उठाकर शाहजी ने बंगलौर में अर्द्ध-स्वायत्त राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया। पूना के आस-पास के क्षेत्रों में अपना शासन स्थापित करने के शिवाजी के प्रयासों की यही पृष्ठभूमि थी। सन 1674 तक शिवाजी ने उन सारे प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था, जो पुरन्दर की संधि के अन्तर्गत उन्हें मुग़लों को देने पड़े थे। पश्चिमी महाराष्ट्र में स्वतंत्र हिन्दू राष्ट्र की स्थापना हुई। शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य ने भारतीय उपमहाद्वीप के तक़रीबन 4.1% भाग पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था लेकिन इसके बाद भी शिवाजी महाराज तेजी से अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे थे।

शिवाजी महाराज के दो बेटे संभाजी और राजाराम थे। संभाजी महाराज उनके बड़े बेटे थे, जो दरबारियों के बीच काफी प्रसिद्ध थे। 1681 में संभाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य का ताज पहना और अपने पिता की नीतियों को अपनाकर वे उन्ही की राह में आगे चल पड़े। संभाजी महाराज ने शुरू में ही पुर्तगाल और मैसूर के चिक्का देवराय को पराजित कर दिया था। संभाजी महाराज की मृत्यु के बाद, उनके सौतेले भाई राजाराम ने सिंहासन संभाला। लेकिन मुगलों की रायगढ़ पर घेरा बंदी शुरू हो चुकी थी और इसलिए उन्हें विशालगढ़ जाना पड़ा और इसके बाद सुरक्षा के लिए उन्हें गिंगी भी जाना पड़ा। वहीं से मराठा शूरवीर मुग़ल सैन्य दलों पर छापा मारते थे और इस प्रकार बहुत से किलों को दोबारा हासिल कर लिया था। उस समय के कुछ महान शूरवीरो में संताजी घोरपडे, धनाजी जाधव, परशुराम पन्त प्रतिनिधि, शंकरजी नारायण सचीव और मेलगीरी पंडित शामिल थे। 1697 में राजाराम ने औरंगजेब को युद्धविराम की संधि भी दी थी लेकिन औरंगजेब ने इंकार कर दिया। 1700 में सिंहगढ़ किले में राजाराम की मृत्यु हो गयी। उनकी विधवा ताराबाई अब साम्राज्य को अपने बेटे रामराज

(शिवाजी द्वितीय) के नाम पर चला रही थी। उन्होंने ही कुछ समय तक मुगलों के खिलाफ मराठा साम्राज्य की कमान संभाली और 1705 से उन्होंने नर्मदा नदी भी पार कर दी और मालवा में प्रवेश कर लिया, ताकि मुगल साम्राज्य पर अपना प्रभुत्व जमा सके।

सन् 1707 में सतारा और कोल्हापुर राज्य की स्थापना की गयी क्योकि उत्तराधिकारी के चलते मराठा साम्राज्य में ही वाद-विवाद होने लगे थे। लेकिन अंत में शाहू को ही मराठा साम्राज्य का नया छत्रपति बनाया गया। लेकिन उनकी माता अभी भी मुगलों के ही कब्जे में थी लेकिन अंततः जब मराठा साम्राज्य पूरी तरह से सशक्त हो गया तब शाहू अपनी माँ को भी रिहा करने में सफल हुए। इसके बाद शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को नए पेशवा के रूप में नियुक्त किया। शाहू के शासनकाल में, रघुजी भोसले ने पूर्व (वर्तमान बंगाल) में मराठा साम्राज्य का विस्तार किया। सेनापति धाबडे ने पश्चिम में विस्तार किया। पेशवा बाजीराव और उनके तीन मुख्य पवार (धार), होलकर (इंदौर) और सिंधिया (ग्वालियर) ने उत्तर में विस्तार किया। ये सभी राज्य उस समय मराठा साम्राज्य का ही हिस्सा था।

सन् 1713 में शाहू ने पेशवा बालाजी विश्वनाथ की नियुक्ति की थी। उसी समय से पेशवा का कार्यालय ही सुप्रीम बन गया और शाहूजी महाराज मुख्य व्यक्ति बने। 1719 में सेना ने दिल्ली पर हल्ला बोला और डेक्कन के मुगल गवर्नर सईद हुसैन हाली के मुगल साम्राज्य को परास्त किया। अप्रैल 1720 में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनके बेटे बाजीराव प्रथम की नियुक्ति शाहू ने पेशवा के रूप में की। बाजीराव ने मराठा साम्राज्य के विस्तार को भारतीय उपमहाद्वीप में 3% से 30% तक पहुंचाया। अप्रैल 1740 तक अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने कुल 41 युद्ध लड़े और उनमे से वे एक भी युद्ध नही हारे। 28 फरवरी 1728 को महाराष्ट्र के नासिक शहर के पालखेड गाँव में जमीन को लेकर बाजीराव प्रथम और कमर-उद्दीन खान और हैदराबाद के असफजाह प्रथम के बीच युद्ध हुआ था। जिसमें निजाम को पराजित कर दिया। इस युद्ध में बाजीराव प्रथम ने सैन्य रणनीति का एक उत्तम उदाहरण पेश किया था।

सन् 1737 में बाजीराव प्रथम के नेतृत्व में दिल्ली के उपनगरो पर दिल्ली के युद्ध में बम वर्षा की और छापा मारा। मुगलो ने इस युद्ध में पूरी तरह से घुटने टेक दिए थे। इसके बाद वसई का युद्ध मराठा और पुर्तगाली शासक के बीच हुआ। यह गाँव मुंबई के उत्तर में 50 किलोमीटर की दुरी पर आता है। इस युद्ध का नेतृत्व बाजीराव के भाई चिमाजी अप्पा ने किया था। बाजीराव का बेटा बालाजी बाजीराव (नानासाहेब) की नियुक्ति शाहूजी महाराज ने दूसरे दरबारियों के विरोध के बावजूद अगले पेशवा के रूप में की। 1740 में मराठा सेना अर्काट में आयी और उन्होंने अर्काट के नवाब दोस्त अली को दमलचेर्री में पराजित किया। इस युद्ध में उनके कई महत्वपूर्ण लोगो को अपनी जान गवानी पड़ी। शुरू में ही विशाल सफलता हासिल करने से मराठा साम्राज्य दक्षिण में भी तेजी से फ़ैल रहा था। दमलचेर्री से

मराठा अर्काट की तरफ गये, जहाँ बिना कुछ किये ही आसानी से उन्होंने मराठा साम्राज्य का विस्तार किया। इसके बाद दिसंबर 1740 को रघुजी ने त्रिचिनोपल्ली पर आक्रमण किया। अंत में कैदी बनाने के बाद चंदा साहेब और उनके बेटे को नागपुर भेजा गया। कर्नाटक के सफल अभियान के बाद त्रिचिनोपल्ली का युद्ध करके रघुजी भी कर्नाटक से वापिस आ गये थे। पेशवा माधवराव प्रथम, मराठा साम्राज्य के चौथे पेशवा थे। उनके शासनकाल में मराठा साम्राज्य का पुनर्गठन किया जा रहा था। मराठा साम्राज्य में उन्होंने एकीकृत सेना की तरह काम किया और निजाम को पराजित करने के लिए दक्षिण की तरफ चल दिए। उन्होंने अपने मुख्य शूरवीर जैसे भोसले, सिंधिया और होलकर को उत्तर में मराठा साम्राज्य के विस्तार के लिए भेजा, जहाँ उन्होंने 1770 के शुरू में ही मराठा साम्राज्य का पुनर्गठन और विस्तार कर लिया था।

मराठा साम्राज्य विस्तार की चरम सीमा पर था। उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के बहुत से भागों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। मराठा साम्राज्य ने हैदर अली और टीपू सुल्तान की मैसूर सल्तनत, हैदराबाद के निजाम और अर्काट के नवाब को पराजित किया। संघीय युग में, महडजी सिंधिया ने मराठा साम्राज्य का पुनर्गठन भारत के उत्तरी भाग में किया। जिसे उन्होंने पानीपत के तीसरे युद्ध के बाद खो दिया था और अंत में 1803-1805 में दूसरे एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठा अपने प्रदेशों को ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ बचा नही पाए। सन् 1818 में पेशवा बाजीराव द्वितीय की हार होने तक मराठा साम्राज्य प्रभावी रहा तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यों से इतिहास में अपना एक स्थान रखता है।

****

श्री आनंद कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

अहंकार

अहंकार या घमंड व्यक्ति का सबसे विनाशकारी तथा सबसे बड़ा शत्रु है। अहंकार हमारे गुणों को ढककर अवगुणों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करता है। अहंकार के कारण ही हमें किसी अन्य व्यक्ति से श्रेष्ठ होने की अनुभूति होती है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दुखों का कारण बनता है। अहंकार से ग्रसित व्यक्ति स्वयं का मूल्यांकन नहीं कर पाता और अपने आप ही स्वयं को अन्य से बेहतर घोषित कर देता है। अहंकार उपलब्ध उचित अवसरों के उचित उपयोग करने के रास्ते में भी बाधक बना रहता है जिसका नुकसान स्वयं उस अहंकारी व्यक्ति को ही उठाना पड़ता है। अहंकार की अग्नि में जलता मानव अच्छे और बुरे में अंतर नहीं कर पाता और यदि वह समय पर अहंकार का त्याग नहीं करता है तो उसे ऐसे नुकसान भी हो जाते हैं जिसकी आजीवन पूर्ति नहीं हो सकती है। तब पश्चाताप के अलावा और कुछ भी नहीं बचता। अहंकार के परिणामस्वरूप एक अच्छा जीवन कष्टों से भर सकता है। अहंकार कुछ नया सीखने के उत्साह को भी कम कर देता है जिससे वह नवीन विकसित होते समाज के साथ सुचारु रूप से तालमेल नहीं बैठा पाता हैं।

अहंकार व्यक्ति के मन में ऐसे भाव उत्पन्न करता है कि वह स्वयं ही सब कुछ है। इसके कारण वह अन्य व्यक्तियों को निम्न समझने लगता है और अपनी बात को आवश्यकता से अधिक महत्व देता है जबकि दूसरों के महत्वपूर्ण बातों पर भी ध्यान नहीं देता है। अहंकार के संबंध में कबीर दास जी ने लिखा है कि:

मैं मैं बड़ी बलाई है, सके निकल तो निकले भाग ।
कहे कबीर कब लग रहे, रुई लपेटी आग।।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि अहंकार व्यक्ति के लिए बहुत बड़ी बला(परेशानी) है। अहंकार के चंगुल से जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी बाहर निकल जाना चाहिए। आगे कहते हैं कि जिस प्रकार रुई और अग्नि का संपर्क अच्छा नहीं होता अर्थात अग्नि रुई को जला देती है। उसी प्रकार अहंकार व्यक्ति के लिए अच्छा नहीं है और उसके व्यक्तित्व को नुकसान पहुँचाता है।

इस प्रकार अहंकार का परित्याग शीघ्र अति शीघ्र करना ही उचित है क्योंकि अहंकार बहुत अधिक बढ़ने की स्थिति में नियंत्रण करना अत्यंत कठिन होता है और यह जितने समय के लिए रहती है हानि पहुँचाती रहती है। अहंकार के कारण ही व्यक्ति दूसरों की सलाह पर ध्यान नहीं देता है और उसे लगता है कि उसका निर्णय सर्वोत्तम है। जिसके कारण गलतियों को सुधारने के बजाय एक के बाद एक गलतियाँ करता जाता है तथा अपनी गलती कभी भी स्वीकार नहीं करता है और उचित समय के अनुसार निर्णय भी नहीं ले पाता है। अहंकार के कारण मन सदैव विचलित रहता है और उन्नति के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है।

सफल जीवन में अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं है। अहंकार से बचने के लिए व्यक्ति को विनम्रता को अपनाना चाहिए। किसी को भी अपने से कम नहीं समझना चाहिए। अपनी किसी अन्य से तुलना करने से बचना चाहिए। यह सोच विकसित करना चाहिए कि हर व्यक्ति का अपना स्थान है। किसी के लिए भी द्वेष नहीं रखना चाहिए। स्वयं का अवलोकन करते हुए दूसरों की बातों को भी पूर्ण सम्मान देना चाहिए। अहंकार के परित्याग के पश्चात व्यक्ति समाज से जुड़ जाता है तथा समाज के विकास में उचित योगदान दे पाता है। अहंकार का परित्याग करने के संबंध में कबीरदास जी कहते हैं कि:

जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नांहि।
सब अँधियारा मिटी गया , जब दीपक देख्या माँहि।।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक स्वयं के अंदर मैं(अहम्) का भाव रहता है तब तक वह हरि(ईश्वर) के भाव से परिचित नहीं हो पाता है। जब अहम् समाप्त होता है तब ईश्वर की उपस्थिति का भाव स्वयं ही आता है। ज्ञान रूपी प्रकाश अपना प्रभाव दिखाता है और अंदर का अंधकार नष्ट हो जाता है। ईश्वर रूपी दीपक के उजाले का ज्ञान होते ही सारा अंधकार मिट जाता है।

अतः व्यक्ति के सर्वोत्तम विकास हेतु अहंकार का परित्याग अत्यंत आवश्यक है। अहंकार के परित्याग के पश्चात व्यक्ति की प्रतिभा और व्यक्तित्व में निखार आता है। जिस व्यक्ति के अंदर अहंकार नहीं होता है, वह स्वयं एवं दूसरों का उचित आदर करता है तथा विचारों का आदान-प्रदान करने में संकोच नहीं करता है जिससे उसके ज्ञान एवं मनोबल में वृद्धि होती है। उनके अंदर नैतिक गुण विकसित होते हैं। इस प्रकार जिस व्यक्ति के अंदर अहंकार नहीं होता है, वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह सही ढंग से कर पाता है तथा समाज में आदर भी पाता है और जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होता है।

****

श्री इमरान खाटीक
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"द्वंद"

मुझे मत बताओ कि मुझे करना क्या है?

गरीब मज़लूम हुं मेरा जीना क्या और मरना क्या है?

अकसर दम तोड़ती है ख्वाहिशें मेरी इस मंहगाई के बाजार में?

कुछ लेने के लिए जेब में बचा क्या है?

कहते हो अमीरों के पास सब कुछ है, गरीबों के पास बचा क्या है?

लूटते हो फिर क्यों उस गरीब लड़की की अज़मत?

फटे हाल कपड़ों में बची इज्जत के अलावा उसके पास और भी बचा क्या है?

समाज के ठेकेदार बन कर सब बेच खाते हो और पूछते हो बिका क्या है?

मज़लूम जब हिसाब लेंगे तुमसे तो पूछेंगे तुम ने किया क्या है?

बिखरा पड़ा है रास्ते पर पूरा परिवार शहीद जवान का उसकी विधवा के पास चंद दिलासो के सिवाय बचा क्या है?

शायद आज विद्रोह लगे बातें मेरी,

पर सोचना बुढ़ापे में आय के नाम पर आपके पास बचा क्या है?

द्वंद कर रही है आज मेरी कलम मुझसे

पुछती है बताओ इमरान सच्चे, मेहनती, देशभक्त जनता की किस्मत में लिखा क्या है?

***

श्री शरद धनगर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

शिरीष कुमार मेहता

गुजरात की सीमा को सटके उत्तर महाराष्ट्र में स्थित चार पहाड़ियों के बीच में बसे "नंदनगरी" नाम से पहचाने जाने वाले नंदुरबार जिले में शिरीष कुमार का जन्म 28 दिसंबर 1926 में एक व्यापारी के घर में हुआ था। उनका पूरा नाम शिरीष कुमार पुष्पेंद्र मेहता था। नंदुरबार में बाला शंकर इनामदार तेल का कारोबार करने वाले एक व्यापारी थे। वे थोड़े दुखी थे क्योंकि उन्हें बेटा नहीं था। उन्हें एक बेटी थी जिनका नाम सविता था। उन्होंने लड़की को पुष्पेंद्र मेहता को सौंप दिया। पुष्पेंद्र मेहता और सविता की शादी 1924 में हुई। जिनसे उन्हें शिरीष कुमार हुए। उनके घर में देशभक्त का जन्म हुआ। प्रसिद्ध यात्री टवेनियर ने 1660 में नंदुरबार को श्रीमंत और समृद्धनगरी बताया, जबकि ऐन-ए-अकबरी 1590 ई में नंदुरबार को सुंदर घरों के साथ एक किलेबंद शहर के रूप में उल्लेख किया गया है। ऐसा भी कहा जाता हैं कि, इस गांव की स्थापना नंद नाम से पहचाने जाने वाले गवली राजा ने की थी। कई यात्रियों ने डोर-टू-डोर व्यापार और विनिमय के महत्व को जानते हुए इस गांव का दौरा किया था। व्यापार की दृष्टि से कई व्यापारियों ने इस क्षेत्र में व्यापार भी शुरू किया था। 1942 का समय था, हिन्दुस्तान में अंग्रेजों का राज था। नंदुरबार जिल्हे में उस अवधि के दौरान, देश के अन्य गांवों और शहरों की तरह, स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा से भरा माहौल था और देश प्रेम सर्वोपरि था। मेहता परिवार नंदुरबार में ऐसे काम में शामिल था। जिल्हे में आजादी के लिए आम आदमी के हाथों में तिरंगा झंडा होता था और सुबह जुलूस और मशाल जुलूस होता था। देशभक्त एक उद्घोषणा करना चाहते हैं। आठवीं कक्षा में पढ़ रहे शिरीष कुमार, महात्मा गांधी और नेताजी सुभाष चंद्र बोस से काफी प्रभावित थे। उस समय, पुलिस "वंदे मातरम" और "भारत माता की जय" का जाप करने वाले किसी को भी गिरफ्तार कर सकती थी।

- “नहीं नमशे, नहीं नमशे” और “निशाण भूमी भारतनु”

महात्मा गांधी ने 9 अगस्त, 1942 को अंग्रेजों को “चले जाओ” का आदेश दिया। उसके बाद, ग्रामीणों ने अंग्रेजों को चेतावनी देना शुरू कर दिया। बराबर एक माह के बाद 9 सितम्बर 1942 को शिरीष कुमार जुलूस में शामिल हुए और गुजराती मातृभाषा में “नहीं नमशे, नहीं नमशे”

“निशाण भूमी भारतनु” जाप शुरू किया। भारतमाता की जयघोष करते हुए गांव में जुलुस घूम रहा था। बच्चों ने "भारत माता की जय", "वंदे मातरम" नारे लगाएं।

मंगल बाजार में हुतात्मा स्मारक बनाया गया है।

मंगल बाजार इलाके में पुलिस वालों ने जुलुस को रोक लिया। उस समय शिरीष कुमार के हाथ में राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा झण्डा) था। अंत में पुलिस ने गोलीबारी शुरू कर दी। एक पुलिस अधिकारी ने जुलूस में भाग लेने वाली लड़कियों पर बंदूक तान दी। तब एक छोटे लड़के ने अधिकारी से कहा "अगर तुम मुझे गोली मारना चाहते हो तो मुझे मार डालो" वह लड़का शिरीष कुमार मेहता थे। शिरीष कुमार मेहता एक वीर पुत्र थे। गुस्साए पुलिस अधिकारी की बंदूक से एक, दो, तीन गोलियां शिरीष कुमार के सीने पर लगी और वह मौके पर ही गिर गए, और उनकी मौत हो गई। वह 9 सितम्बर 1942 को शहीद हो गए। उनके साथ, पुलिस की गोलीबारी में लालदास शाह, धनसुखलाल वाणी, शशिधर केतकर और घनश्यामदास शाह भी शहीद हो गए। उनके चार साथियों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन का बलिदान दिया। इसलिए, इस“नंदनगरी" नाम से पहचाने जाने वाले नंदुरबार का नाम देश के कोने-कोने तक पहुँच गया।

***

श्री रवि कुमार
लेखापरीक्षक

मुंबई की लोकल ट्रेन

मुंबई शहर जो सपनों की नगरी के नाम से जानी जाती है। दूसरी तरफ इसे माया नगरी भी कहा जाता है। यहाँ विभिन्न राज्यों से भिन्न भिन्न प्रकार के लोग अलग-अलग सपने लेकर आते है, जहाँ कुछ लोगों के सपने तो पूरे होते हैं और कुछ लोगों के सपने हालात के साथ बदल जाते है।

यात्रा का शाब्दिक मतलब होता है एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। जब भी यात्रा करने की बात आती है तो सबके मन में शीर्ष स्थान पर ट्रेन का ही चित्र छा जाता है। रेलयात्रा हर वर्ग और हर आयु के लोगों को आकर्षित करती है। ट्रेन से यात्रा करना रोमांचक होने के साथ-साथ उत्साह एवं उमंग से भरपूर होता है।

मुंबई में स्थानीय यात्रा के साधन के रुप में लोकल ट्रेन का स्थान अत्यंत उपयोगी साधन के रूप में है। लोग इसे मुंबई की जीवन रेखा(लाइफ-लाइन) कहते हैं। यह एक उपनगरीय सुविधा है। लोकल ट्रेन मुंबई को इसके आस-पास के क्षेत्रों से भी जोड़ता है। लोकल ट्रेन मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में बंटा हुआ है जो पश्चिम(वेस्टर्न), मध्य(सेंट्रल) एवं हर्बर के नाम से जानी जाती है। पश्चिम रेल लोकल चर्चगेट से शुरू होकर दहानू रोड तक विस्तारित है, वही मध्य लोकल सीएसएमटी से शुरू होकर कसारा तक एवं हर्बर लोकल सीएसएमटी से शुरू होकर पनवेल तक अपना परिवहन सुविधा फैलाये हुए है। मुंबई में लोकल ट्रेन का नेटवर्क बहुत ही विशाल है। मुंबई में एक स्थान को दूसरे से जोड़ने के लिए लोकल अत्यंत उपयोगी साधन है।

यदि बात मुंबई लोकल ट्रेन की यात्रा की करें तो उसका आंनद ही अलग हैं। आज जहाँ महँगाई आम जनता की कमर तोड़ रही है वहीं लोकल ट्रेन का भाड़ा थोड़ी राहत पहुँचा रहा है। मुंबई की जनता और मुंबई लोकल ट्रेन का संबंध ऐसा है मानो जैसे वो एक-दूसरे के लिए बने हो। बात लोकल ट्रेन की यात्रा की करें तो बहुत सुबह से ही ट्रेनों का आवागमन शुरू हो जाता है और कुछ -कुछ मिनट के अंतराल पर एक ट्रेन के बाद दूसरी ट्रेन का सिलसिला जारी रहता है और उन ट्रेनों से यात्रा के लिए एवं समय पर ऑफिस जाने वाले यात्रियों की भीड़ रेलवे स्टेशन पर तैयार खड़ी रहती है। स्टेशन पर खड़ा हर एक यात्री सुबह जब वो ऑफिस के लिए निकलता है तो वो भगवान से प्रार्थना करके निकलता है कि आज उसके सुविधा के अनुसार किसी प्रकार ट्रेन में चढ़ने/बैठने को मिल जाए और यह एक ऐसी कामना है जो सुबह आई हर एक ट्रेन से टकराती और धीरे -धीरे धूमिल होते जाती है। यहाँ व्यक्ति हजारों की भीड़ से लड़ता,धक्का

खाता हुआ बीच-बीच में समय को देखते हुए कभी मायूस होता है तो कभी दूसरी आती ट्रेन को देख कर खुश होता है। समय पर कार्यालय जाने के लिए यात्री बहुत मशक्कत करने के बाद कैसे भी ट्रेन के अंदर या गेट पर लटका हुआ, आवाज लगाता हुआ ' पुढे चला '(आगे चलो) एवं धक्का-मुक्की करता हुआ, कुछ अच्छे -अच्छे शब्द अपने बगल वाले साथी को आवाज देता हुआ किसी तरह भीड़ में एडजस्ट करता हुआ और बदन की कशरत करवाता हुआ ट्रेन की चाल में खुद को मैनेज करके चल पड़ता है मंजिल की ओर, खचाखच भीड़ के साथ ट्रेन अगले स्टेशन पर जा रुकती है जहाँ यात्री ट्रेन के इंतजार में खड़े है। देखने से यही लगता है कि ट्रेन में हवा तक घुसने की जगह नहीं है फिर भी दस-बीस यात्री बलपूर्वक या प्रेमपूर्वक घुस या लटक जाते है फिर शुरू होता है आपसी प्यारी-प्यारी बातें, नोक-झोंक एवं आंनदमय बातें जो वो एक दूसरे को प्रदान करते है वो नजारा देखने और सुनने में अलग ही अनुभव प्रदान करता है। कुछ-कुछ स्टेशन पर इतनी ज्यादा भीड़ हो जाती है कि वहाँ की जनता को रिटर्न मारना पड़ता है। रिटर्न लोकल यात्रा का एक आमतौर पर प्रयोग किया जाने वाला शब्द है, जिसका अर्थ यह है कि यात्री जब लोकल अपने गंतव्य की ओर जा रही होती है तो अंतिम स्टेशन से एक, दो या कुछ स्टेशन पहले ही यात्री उसमे सवार हो जाते हैं और फिर उसी ट्रेन से अपने निर्धारित स्टेशन की ओर यात्रा करते हैं। ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे जिन्होंने प्रतिदिन का रूटीन बना रखा है कि एक निश्चित ट्रेन से रिटर्न्स का प्रयोग करके कार्यालय जाना है।

मुंबई लोकल के यात्रियों ने लोकल ट्रेन की यात्रा को रुचिकर एवं सुखदाई बनाने का रास्ता भी ढूंढ रखा है, जिसमे कुछ यात्री संगीत कार्यक्रम से जुड़े समान को ट्रेन में लेकर चलते है जिससे सफर में खुद का एवं वहाँ उपस्थित सभी यात्रियों का मनोरंजन होता रहता है। संगीत एवं भजन करने वालों का एक खास समूह) ग्रुप (होता है जो प्रतिदिन एक खास डिब्बे में सफर करते है और उनके द्वारा उस डिब्बे में बनाए गए संगीत माहौल का आंनद ही अलग

प्रकार का होता है जैसे मानो शरीर में एक अलग प्रकार की ऊर्जा उत्पन हो रही हो और मुश्किल सफर भी आसान एवं आनंदमय प्रतीत होने लगता है। कभी-कभी चलती ट्रेन में बहुतों का जन्मदिन भी मनाया जाता है। यूँ तो सफर में तकलीफ एवं मजा दोनों आता है, परन्तु कुछ ऐसे भी सज्जन ट्रेन में मिल जाते है जो जानबुझ के लोगों से झगड़ा, बत्तमीजी एवं अपशब्द इस्तेमाल करते है जो सफर को मुश्किल एवं बोझिल बनाते है, साथ ही साथ कुछ जेब-कतरों से सावधान रहना पड़ता है जो सफर में कहीं भी कभी भी बिन बुलाए मिल जाते हैं। इन सब के अलावा यात्रा के दौरान कुछ अच्छे अच्छे दोस्त भी बन जाते है जो प्रतिदिन साथ में कार्यालय जाते कभी वापस आते मिल जाते है।

इस प्रकार लोकल ट्रेन का सफर कई मायनों में अनोखा होता है। ट्रेन की यात्रा हमें जीवन के कई सबक सिखाती है। यदि आप अपने ज़िन्दगी में कुछ हासिल करना चाहते है तो आपको उस चीज के लिए जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी। सफर के द्वारा हुए अनुभव और सीखे गए सबक जिंदगी के लिए काफी मूल्यवान हैं। व्यस्त प्लेटफॉर्म और भिन्न-भिन्न नजारें हमें ऐसी यादें देते हैं जिन्हें हम हमेशा अपनी जीवन की यादों में संजो कर रखना चाहेंगे। सभी लोगों को अपनी जिंदगी में एक बार मुंबई लोकल रेलयात्रा जरूर करनी चाहिए और इसके अनुभव का आनंद लेना चाहिए।

***

श्री नीरज कुमार
लेखापरीक्षक

डायनासोर काल

काफी समय पहले दुनिया बहुत अलग थी। उस समय ज्यादातर जमीन पानी के नीचे था और हर समय बेहद गर्मी रहती थी। तब डायनासोर हर जगह पाए जाते थे। बड़े डायनासोर और छोटे डायनासोर, तेज डायनासोर और धीमे डायनासोर, कुछ डायनासोर मांस खाते थे कुछ पौधे खाते थे।

स्टैगोसॉरस : इस डायनासोर की पीठ पर प्लेटें थी। वे प्लेटें हड्डियों की बनी थी। उसकी पूँछ पर नुकीले कांटे थे। ये पौधे खाते थे। इनका नाम स्टैगोसॉरस था ।

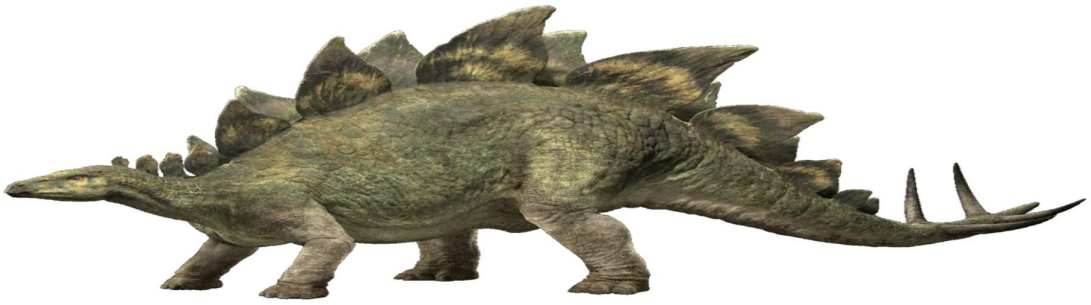

डिप्लोडोकस : यह डायनासोर लम्बा था लेकिन उसमे ज्यादातर गर्दन और पूँछ थी। उसके दांत छोटे और चपटे थे। ये पौधे खाते थे। उसका नाम डिप्लोडोकस था।

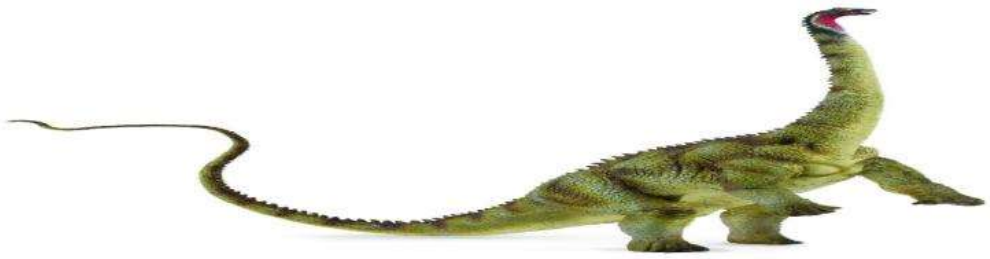

एंकिलोसॉरस : इस डायनासोर का कछुए की तरह एक खोल था। इसकी पूँछ एक गदा की तरह थी। बहुत से जानवर उसे चोट नहीं पंहुचा सकते थे। इसका नाम एंकिलोसॉरस था ।

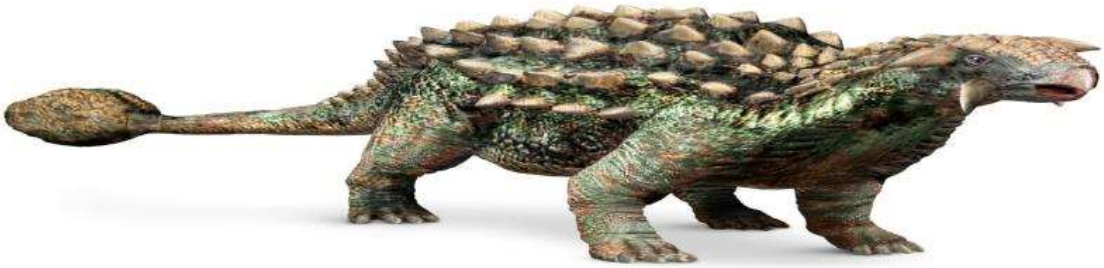

अपाटोसॉरस : ये डायनासोर बेहद विशालकाय थे लेकिन उनका शरीर काफी छोटा था। ये पौधे खाते थे। ये अपने विशाल शरीर के पोषण के लिए दिन रात खाते थे और उनका नाम अपाटोसॉरस था ।

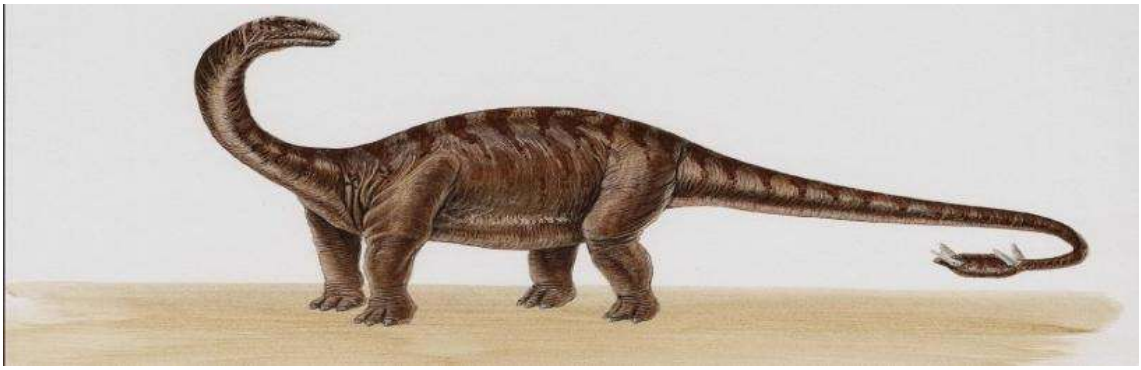

कॉम्पसोगनाथस : ये डायनासोर छोटे थे। ये एक बिल्ली जितना बड़ा होते थे लेकिन तेजी से दौड़ सकते थे। ये अन्य जानवरो को पकड़ सकते थे। उनका नाम कॉम्पसोगनाथस था ।

टेराटोसॉरस : ये डायनासोर अपने पिछले पैरो पर चलते थे और इनके बड़े बड़े पंजे और नुकीले दांत थे। ये मांस खाते थे। इनका नाम टेराटोसॉरस था ।

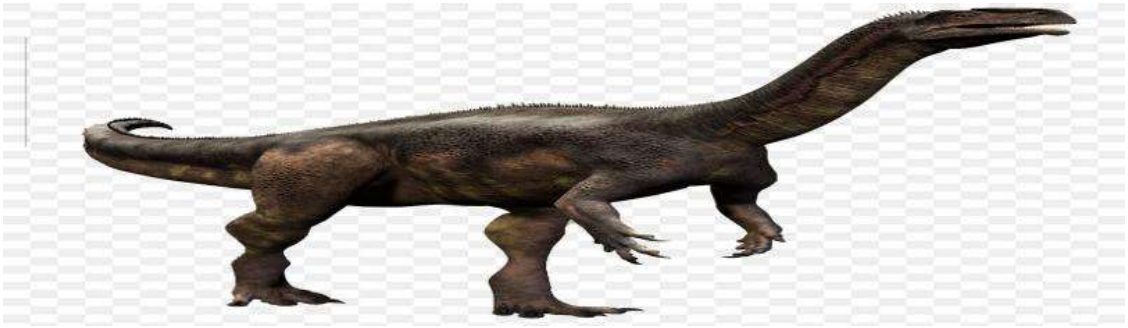

<u>एनाटोसॉरस</u> : इस डायनासोर को इकबिल कहते है। इसकी एक बतख जैसी चोंच थी पर इसकी चोंच में दांत नहीं थे लेकिन उसके मुँह में दांत थे। इसके मुँह में सैकड़ो दांत थे। कभी कभी कोई दांत टूट जाता था लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योकि जल्द ही एक नया दांत उग आता था। इसका नाम एनाटोसॉरस था ।

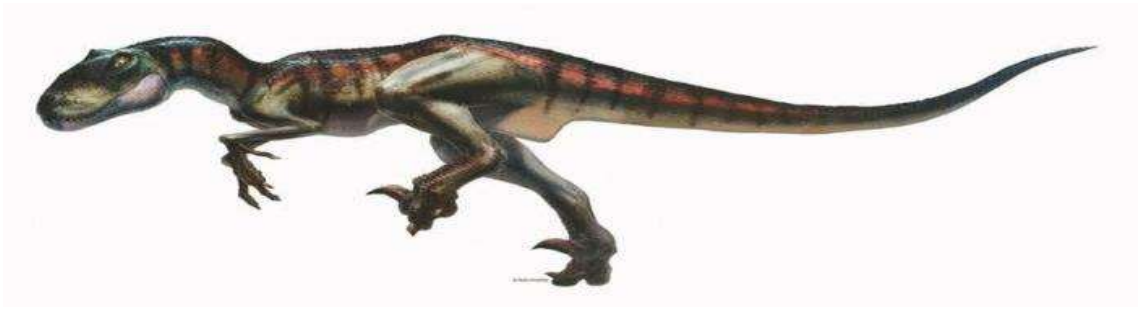

<u>ऑर्निथोमिमस</u> :इस डायनासोर की एक चोंच थी लेकिन इसके दांत नहीं थे। ये छोटे जानवरों और कीड़ो को खाते थे। शायद ये फल भी खाते हों और अन्य डायनासोर के अंडे भी लेकिन उसके दांत नहीं थे फिर वो कैसे खाता होगा?? चिड़िया भी खाती है लेकिन उसके कोई दांत नहीं होते। शायद ये भी एक पक्षी की तरह ही खाते होंगे। इसका नाम ऑर्निथोमिमस था ।

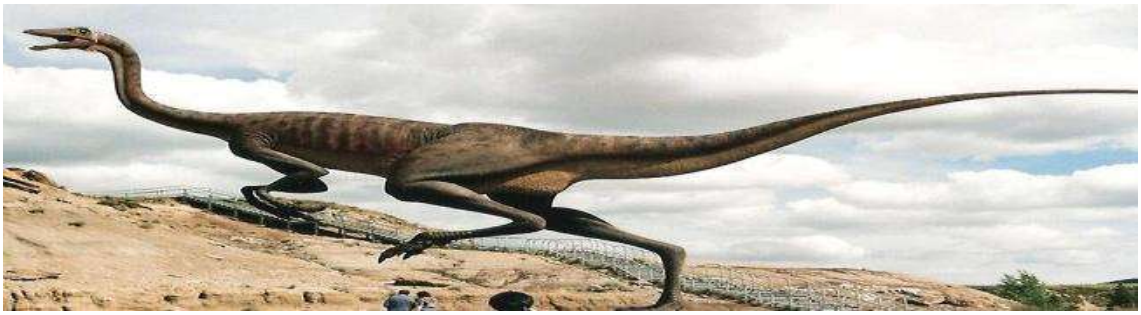

<u>ब्रैकियोसॉरस</u> : यह एक मोटा डायनासोर था। ये अपने दुश्मनो से भागने के लिए बहुत मोटे

थे। इसलिए ये पानी में ही रहते थे। वहाँ ये सुरक्षित थे और उनका खाना भी पास में ही था। ये पौधे खाते थे। इनका नाम ब्रैकियोसॉरस था ।

<u>पेंटासेराटोप्स</u> : इस डायनासोर के पांच सींग थे। ये सभी सींग उसके चेहरे पर थे। इसका नाम पेंटासेराटोप्स था। इसका नाम एकदम सही था जिसके नाम का अर्थ था "चेहरे-पर-पांच-सींग"।

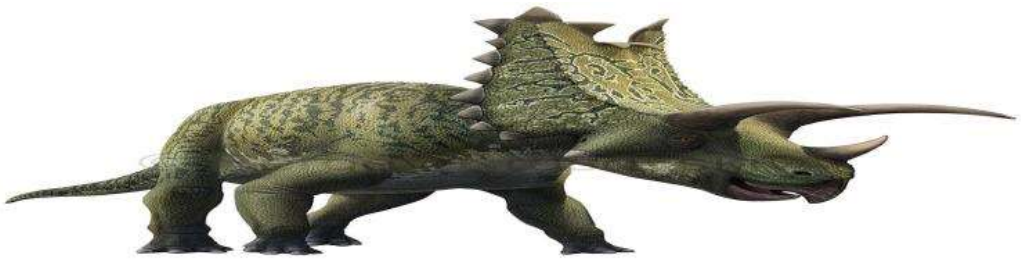

<u>टायरानोसॉरस</u> :यह डायनासोर सबसे बड़ा मांसाहारी डायनासोर था। उसके बहुत बड़े जबड़े थे। इसके दांत छह-छह इंच लम्बे थे। ये अन्य डायनासोर को खाते थे। इनका नाम टायरानोसॉरस था ।

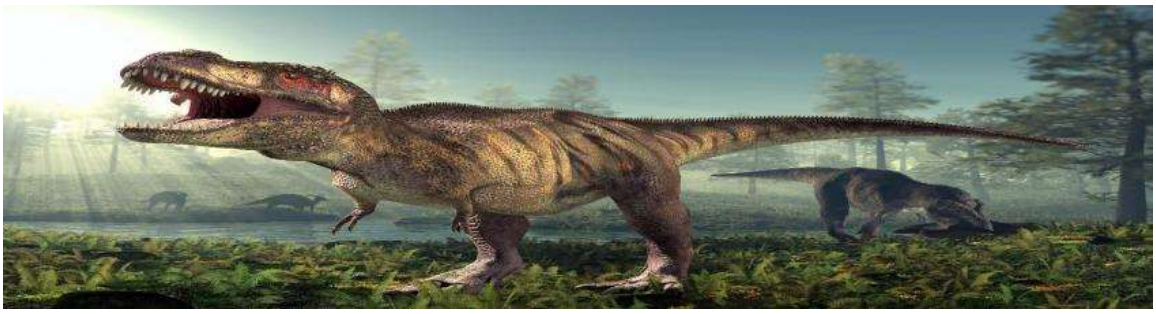

डायनासोर एक लम्बे समय तक हर जगह पाए जाते थे फिर वे मर गए और लुप्त हो गए। किसी को नहीं पता ऐसा क्यों हुआ लेकिन कभी इस दुनिया में उनका ही राज था। वह डायनासोर काल था।

****

श्री हरीश कुमार
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

पर्यावरण

पर्यावरण जलवायु, स्वच्छता, प्रदूषण तथा वृक्ष का संपूर्ण योग है। जो हमारे रोज के जीवन में सीधा संबंध रखता है तथा उसे प्रभावित करता है। वर्तमान में वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप मिलों, कारखानों तथा वाहनों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि पर्यावरण की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़तीजा रही है। मानव और पर्यावरण एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं, अर्थात हमारी जलवायु में परिवर्तन होता है तो इसका सीधा असर हमारे शरीर पर दिखने लगता है। जैसे ठंड ज्यादा लगती है तो हमें सर्दी हो जाती है। लेकिन गर्मी ज्यादा पडती है तो हम सहन नहीं कर पाते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व में एक महान भूमिका निभाता है और यह मनुष्य, जानवरों और अन्य जीवित चीजों को विकसित करने में मदद करता है। मनुष्य अपनी कुछ बुरी आदतों और गतिविधियों के कारण अपने पर्यावरण को नष्ट होने की ओर ढकेल रहा है।

पर्यावरण का अर्थ बड़ा सरल है। जो हमारे चारों ओर के वातावरण और उसमें निहित तत्वों और उसमें रहने वाले प्राणियों से है। हमारे चारों ओर उपस्थित वायु, भूमि, जल, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि सभी पर्यावरण का हिस्सा है। जिस तरह से हम अपने पर्यावरण से प्रभावित होते हैं उसी तरह से हमारा पर्यावरण हमारे द्वारा किए गए कृत्यों से प्रभावित होता है। जैसे लकड़ी के लिए काटे गए पेड़ों से जंगल समाप्त हो रहे हैं और जंगलों के समाप्त होने का असर जंगल में रहने वाले प्राणियों के जीवन पर पड़ रहा है। यही कारण है कि आज कई जीवों की बहुत सी प्रजातियाँ विलुप्त हो गई है और बहुत सी जातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। आज के समय में शेर अथवा चीतों के द्वारा गाँव में घुसने और वहाँ पर रहने वाले मनुष्यों को हानि पहुँचाने की बात सामने आ रही है।

इसके चलते आज कई प्राणी बेघर हो रहे है क्योंकि हमने इन प्राणियों से इनका घर छीन लिया है। यही कारण है अब ये प्राणी गाँवो और शहरों की तरफ जाने के लिए मजबूर हो गए हैं। तथा अपने जीवन यापन के लिए मनुष्यों को हानि पहुँचाने लगे हैं। पर्यावरण का अर्थ केवल हमारे आस-पास के वातावरण से नहीं है बल्कि हमारा सामाजिक और व्यवहारिक वातावरण को शामिल करता है। मानव के आस-पास उपस्थित सोशल, कल्चरल, एकोनोमिकल, बायोलॉजिकल और फिजिकल आदि सभी तत्व जो मानव को प्रभावित करते हैं। वे सभी वातावरण में शामिल होते हैं। जो पर्यावरण को प्रभावित करता है।

पर्यावरण प्रदूषण के बहुत से कारण है जिनसे हमारा पर्यावरण प्रभावित होता है। मानव द्वारा निर्मित फैक्ट्री से निकलने वाले अवशेष हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं और पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं। लेकिन यह भी संभव नहीं है कि इस विकास की दौड़ में हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अपने विकास को नजर अंदाज कर दें। लेकिन हम कुछ बातों को ध्यान में रखकर अपने पर्यावरण को दूषित होने से बचा सकते हैं। मिलों, कारखानों तथा व्यवसायिक इलाकों से बाहर निकलने वाले धुएं तथा विषैली गैसों ने पर्यावरण की समस्या को उत्पन्न कर दिया है। बसों, कारों, ट्रकों, टंपुओं से इतना अधिक धुआं और विषैली गैसी निकलती है जिससे प्रदूषण की समस्या और अधिक गंभीर होती जा रही है । आज के समय में घर में इतने सदस्य नहीं होते हैं जितने उनके वाहन होते हैं। आज के दौर में घर का छोटा बच्चा भी साइकिल की जगह, गाड़ी पर जाना पसंद करता है।

बहती नदियों के पानी में सीवर की गंदगी इस तरह से मिल जाती है जिससे मनुष्यों और पशुओं के पीने का पानी गंदा हो जाता है। जिसके परिणामस्वरूप दोनों निर्बलता, बीमारी तथा गंभीर रोगों के शिकार बन जाते हैं। बड़े-बड़े नगरों में झोंपड़ियों के निवासियों ने इस समस्या को बहुत अधिक गंभीर कर दिया है। शहरीकरण और आधुनिकीकरण पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। मनुष्य द्वारा अपनी सुविधाओं के लिए पर्यावरण को नजर अंदाज करना एक आम बात हो गई है। मनुष्य बिना सोचे समझे पेड़ों को काटते जा रहा है लेकिन वह यह नहीं सोचता कि जीवन जीने के लिए वायु हमें इन्हीं पेड़ों से प्राप्त होती है। बढती हुई आबादी हमारे पर्यावरण के प्रदूषण का एक बहुत ही प्रमुख कारण है। जिस देश में जनसंख्या लगातार बढ़ रही है उस देश में रहने और खाने की समस्या भी बढती जा रही है। मनुष्य अपनी सुख-सुविधाओं के लिए पर्यावरण को महत्व नहीं देता है लेकिन वह भूल जाता है कि बिना पर्यावरण के उसकी सुख-सुविधाएँ कुछ समय के लिए ही हैं।

हम जिस पर्यावरण में रहते हैं वह बहुत तेजी से दूषित होता जा रहा है। हमें आवश्यकता है कि हम अपने पर्यावरण की देखरेख और संरक्षण ठीक तरीके से करें। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण की परंपरा बहुत पहले से चली आ रही है। हमारे पूर्वजों ने विभिन्न जीवों को देवी-देवताओं की सवारी मानकर और विभिन्न वृक्षों में देवी देवताओं का निवास मानकर उनका संरक्षण किया है। पर्यावरण संरक्षण मानव और पर्यावरण के बीच संबंधों को सुधारने की एक प्रक्रिया होती है। जिसका उद्देश्य उन क्रियाकलापों का प्रबंधन होता है जिनकी वजह से पर्यावरण को हानि होती है तथा मानव की जीवन शैली को पर्यावरण की प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप आचरणपरक बनाते है जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता बनी रह सके। कारखानों से निकलने वाले धुएं और पदार्थों का उचित प्रकार से निस्तारण किया जाना चाहिए।

सभी मिलों, कारखानों तथा व्यावसायिक इलाकों में प्रदूषण नियंत्रण के लिए संयत्र लगाए जाने चाहिए। प्रदूषण और गंदगी की समस्या का निदान बहुत अधिक आवश्यक है। ताकि हमारे पर्यावरण की सुरक्षा हो सके। कई संयंत्रों के द्वारा धुएं और विषैली गैसों को सीधे आकाश में ही निष्कासित किया जाना चाहिए। बड़े नगरों में बसों, कारों, ट्रकों, स्कूटरों के रखरखाव की

उचित व्यवस्था होनी चाहिए और उनकी नियमित रूप से चेकिंग होनी चाहिए। शांतिपूर्ण जीवन के लिए शोरगुल वाली ध्वनि को सीमित और नियंत्रित किया जाना चाहिए। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सरकार के साथ-साथ सभी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को अपना पूरा सहयोग देना चाहिए। विषैले और खतरनाक अवशिष्ट पदार्थों से निपटने के लिए सख्त कानूनों का प्रावधान होना चाहिए। कृषि में रासायनिक कीटनाशकों का कम प्रयोग करना चाहिए। वन प्रबंधन से वनों के क्षेत्रों में विकास करनी चाहिए। विकास योजनाओं को आरंभ करने से पहले पर्यावरण पर उनके प्रभाव का आंकलन करना चाहिए। मनुष्य के अपने प्रयासों से पर्यावरण की समस्या अधिकतर घट सकती है। जो कारखाने स्थापित हो चुके हैं उन्हें तो दूसरे स्थान पर स्थापित नहीं किया जा सकता है लेकिन सरकार को उन कारखानों की प्रतिवर्ष जांच करनी चाहिए। ताकि कारखानों द्वारा किया गया प्रदूषण शहर की जनता को प्रभावित न करे। जितना हो सके वाहनों का कम प्रयोग करना चाहिए। पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करके भी इस समस्या को कम किया जा सकता है। हमारे वैज्ञानिकों द्वारा धुएं को काबू करने के लिए खोज जारी है। जंगलों की कटाई पर सख्त सजा देनी चाहिए तथा नए पेड़ लगाने की प्रक्रिया शुरू होनी चाहिए।

विश्व पर्यावरण दिवस हर साल 5 जून को मनाया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस के दिन हर जगह पेड़-पौधे लगाए जाते हैं तथा पर्यावरण से संबंधित बहुत से कार्य किए जाते हैं जिसमें 5 जून का विशेष महत्व होता है। आज के समय में मनुष्य को अपने स्तर पर पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए प्रयास करना चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त होना किसी भी एक समूह की कोशिश की बात नहीं है। इस समस्या पर कोई भी नियम या कानून लागू करके काबू नहीं पाया जा सकता। अगर प्रत्येक मनुष्य इसके दुष्प्रभाव के बारे में सोचे और आगे आने वाली पीढ़ी के बारे में सोचे तो इस समस्या की गंभीरता और इसके निवारण के बारे में आगे कार्य करना महत्वपूर्ण हो जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस 2020 की थीम 'जैव-विविधता' है। इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय यानी विश्व पर्यावरण दिवस 2021 की थीम "पारिस्थितिकी तंत्र बहाली" है।कई राज्य सरकारों ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बहुत से कानून बनाये है। केंद्रीय सरकार के अंतर्गत पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक मंत्रालय का उद्घाटन किया है। इस समस्या के समाधान के लिए जन साधारण का सहयोग बहुत ही सहायक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विकास की कमी और विकास प्रक्रियाओं से भी पर्यावरण की समस्या उत्पन्न होती हैं। हर साल सरकार को नए नियम बनाना चाहिए जिससे पर्यावरण की रक्षा बड़े ही गंभीरता के साथ हो सके और आने वाली पीढ़ी को पर्यावरण से हानि नहीं पहुंचे तथा पर्यावरण के महत्व को समझाया जा सके।

****

राजभाषा संबंधी जानकारी

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अनुसार हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने वाले दस्तावेज --

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1- सामान्य आदेश (General Orders)

2 -संकल्प (Resolution)

3- परिपत्र (Circulars)

4-नियम (Rules)

5- प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)

6- प्रेस विज्ञप्तियां (Press Release/Communiques)

7- संविदाएं (Contracts)

8- करार (Agreements)

9- अनुज्ञप्तियां (licenses)

10- निविदा प्रारुप (Tender Forms)

11- अनुज्ञा पत्र (Permits)

12- निविदा सूचनाएं (Tender Notices)

13- अधिसूचनाएं (Notifications)

14- संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र (Reports and documents to be laid before the Parliament)

हिंदी - हमारी राज भाषा

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह

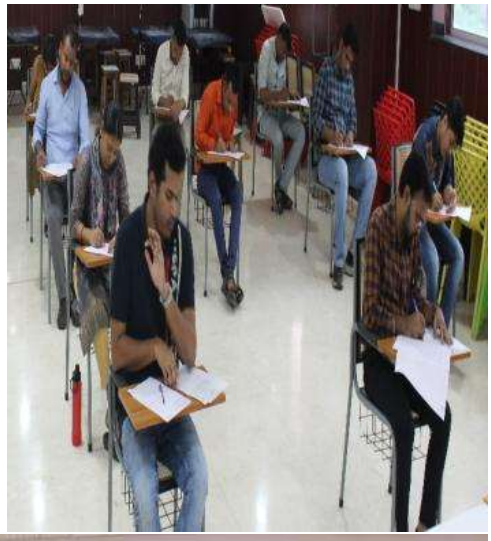
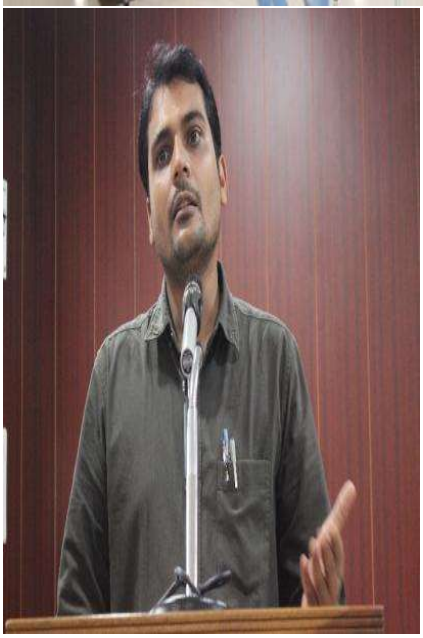

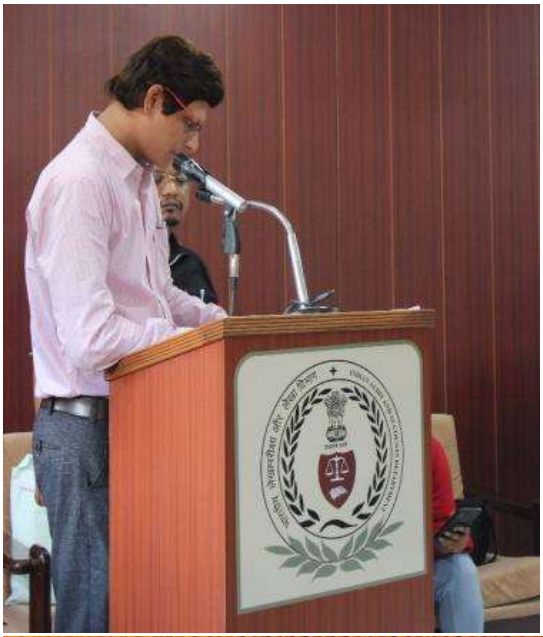

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान पुरस्कार वितरण

नवरात्रि उत्सव

कार्यालय के खेल वर्ग कार्मिक श्री आकाश गुप्ता, लेखापरीक्षक की उपलब्धियां

आगरा में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा टेबल टेनिस टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक

अंतर क्लब टेबल टेनिस टूर्नामेंट में सबसे अच्छे खिलाड़ी का खिताब

वार्षिक अंतर कार्यालय टेबल टेनिस लीग 2022 में स्वर्ण पदक

इस कार्यालय के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी के सुपुत्र का किक बॉक्सिंग में सफलता

हमारे कार्यालय के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरियों श्री संदीप देशप्रभु और श्रीमती मीना देशप्रभु के 24 वर्षीय सुपुत्र श्री ऋत्विक देशप्रभु ने अगस्त 2022 मे हुए वाको इंडियन सीनियर्स एंड मास्टर्स राष्ट्रीय किक बॉक्सिंग चैंपियनशिप मे 81-83 किलोग्राम वजन वर्ग में कांसपदक जीता।

श्री ऋत्विक ने स्कल्प्ट फ़िटनेस एंड एमएमए वकोला में 2021 से किक बॉक्सिंग खेलना शुरू किया। श्री ऋत्विक ने पहली बार अगस्त 2021 मे अल्टीमेट किक बॉक्सिंग स्पर्धा (ठाणे जिला किक बॉक्सिंग असोशिएशन) में भाग लिया और स्वर्ण पदक हासिल की। तत्पश्चात मार्च 2022 मे आयोजित महापोर कप किक बॉक्सिंग स्पर्धा में श्री ऋत्विक ने जीत हासिल की और स्वर्ण पदक जीता।

16 जुलाई 2022 को अहमदनगर में हुए अखिल महाराष्ट्र राज्य किक बॉक्सिंग चैंपियनशिप मे श्री ऋत्विक का चुनाव हुआ और स्वर्ण पदक जीतकर चेन्नई मे हुए इंडियन सीनियर्स एंड मास्टर्स राष्ट्रीय किक बॉक्सिंग चैंपियनशिप मे भाग लिया और कांसपदक जीता।

श्री ऋत्विक देशप्रभु ने सरदार पटेल इन्स्टीटयूट ऑफ टेक्नोलोजी से इंजीन्यरिंग किया है। वे डेलोइट यूएसाय में रिस्क एंड फिनांशीयल सेक्युर्टी एनलिस्ट के पद पर कार्य करते है ।

आपके पत्र

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), रांची

हिंदी पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा हमेशा की तरह अत्यन्त आकर्षक एवं मनोरम हैं। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियां एवं कविताएं पठनीय, उत्कृष्ट, एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्रीमती कल्याणी वेदपाठक द्वारा लिखित यात्रा संस्मरण - 'आसाम तथा मेघालय पर्यटन, श्रीमती अनु गोडिक द्वारा लिखित आलेख - उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा (परिभ्रमण), श्री शरद धनगर द्वारा लिखित लेख- महंगाई, तथा कविताओं में श्री शरद धनगर द्वारा लिखित कविता "क्या जाता है साथ में" एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और शुभेच्छाएँ है।

(संजीव कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.

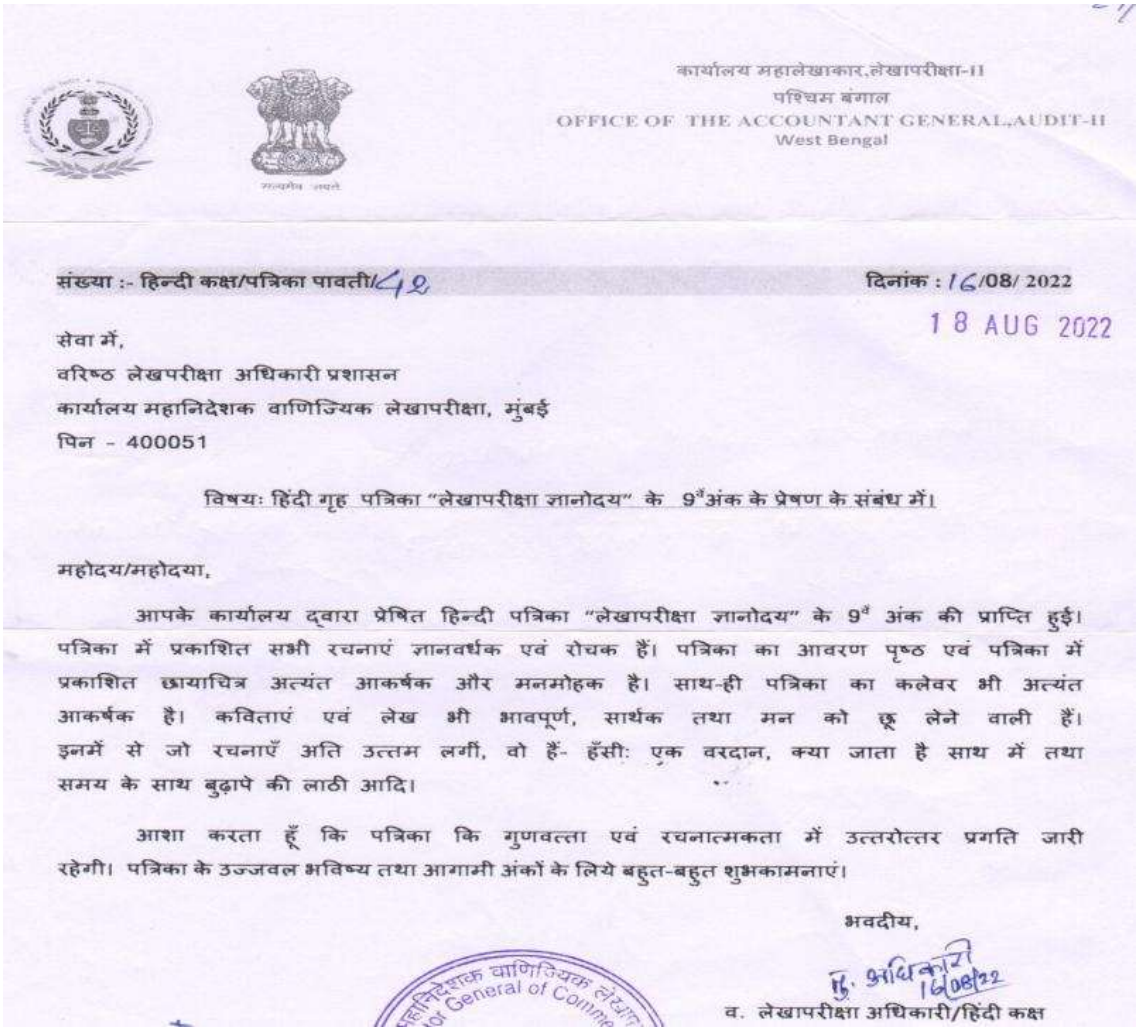

कार्यालय महालेखाकार,लेखापरीक्षा-II
पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL,AUDIT-II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/42 दिनांक : 16/08/ 2022

18 AUG 2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखपरीक्षा अधिकारी प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
पिन - 400051

विषयः हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं, वो हैं- हँसी: एक वरदान, क्या जाता है साथ में तथा समय के साथ बुढ़ापे की लाठी आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका कि गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

ह. अधिकारी 16/08/22

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
सिविल लाईन्स, नागपुर-440001
OFFICE OF
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II
MAHARASHTRA
CIVIL LINES, NAGPUR 440 001
Ph: 0712-2565161-67 / Fax: 0712 – 2560484
Email: agacMaharashtra2@cag.gov.in
Web: https://cag.gov.in/ag/nagpur/en

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सं. रा.भा.अ./20/जा.क्र.- 54 दिनांक : 01 /08/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी,
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी 25, ऑडिटभवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा,
मुम्बई 400051
महोदया,

सर्वप्रथम, आपके कार्यालय की तिमाही हिन्दी इ-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 9 वें संस्करण के प्रेषण के लिए सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित श्रीमती कल्याणी वेदपाठक का लेख "आसाम तथा मेघालय पर्यटन" उत्तर पूर्व क्षेत्र की तस्वीर सामने रखती है श्रीमती अनु गोड़ीक का लेख "उत्तर वाहिनी नर्मदा परिक्रमा" नर्मदा परिक्रमा का परिचय तथा यात्रा करने की इच्छा जगाता है, श्री आनंद कुमार सिंह का लेख राजभाषा हिन्दी की आत्मकथा राजभाषा के सफर की कहानी सुनाता है, "समय के साथ बुढ़ापे की लाठी" श्री रविकुमार का यह लेख बहोत अच्छा है, साथ ही "जिन्दगी एक सफर ... उल्लेखनीय और सुन्दर है। कविता में श्री शरद धनगर "क्या जाता है साथ में" जीवन के सत्य को उजागर करता है।

अन्य सभी रचनाएँ उत्कृष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका की साज-सज्जा तो प्रशंसा की पात्र है। पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक साधुवाद तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ रा.भा. अनुभाग

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या / No. 21

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(INFRASTRUCTURE), DELHI

दिनांक / Dated

सं.-प्रशा./हिंदीअनुभाग/747/हिंदीपत्रिका/2022 / 4885 दिनांक: 25.07.2022

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन अनुभाग),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स
बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051.

विषयः हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 9वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 9वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय हैं जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में मुख्यतः श्रीमती कल्याणी वेदपाठक की **असम तथा मेघालय पर्यटन**, श्रीमती अक्षता पावड़े की **ज़िंदगी एक सफ़र है सुहाना**, श्री आंदर कुमार सिंह की **राजभाषा हिंदी की आत्मकथा** और श्री रवि कुमार की **समय के साथ बुढ़ापे की लाठी** आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं। हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु आपका यह प्रयास प्रशंसनीय है। **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए **'संवाद'** परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ।

भवदीय,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी(हिंदी)

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं0 हि0क0 / ले0 व ह0 / पत्रिका समीक्षा / 2022–23 /114 — दिनांक :–22/07/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी–25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा,
मुंबई – 400051

विषय: तिमाही हिंदी ई–पत्रिका ' लेखापरीक्षा ज्ञानोदय ' के 9वें संस्करण का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई–पत्रिका ' लेखापरीक्षा ज्ञानोदय ' के 9वें संस्करण की ई–प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,

दिनेश शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

Dedicated to Truth in Public Interest

Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/56
दिनांक: 29-07-2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

<u>विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "ज्ञानोदय" के 9 वें अंक के प्रतिभाव के संबंध में।</u>

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "ज्ञानोदय" के 9 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, सुश्री राजेश्वरी राजू की रचना "पर्यावरण", सुश्री कल्याणी वेदपाठक की रचना "आसाम तथा मेघालय पर्यटन", सुश्री अक्षता पावड़े की रचना "हंसी: एक वरदान", सुश्री अनु गोडिक की रचना "उत्तरवाहिनी नर्मदा परिक्रमा (परिभ्रमण)", श्री आनंद कुमार की रचना "राजभाषा हिंदी की आत्मकथा", श्री इमरान खाटीक की रचना "इस्लाम में जकात का महत्व", श्री शरद धनगर की रचना "क्या जाता है साथ में", श्री हरीश कुमार की रचना "कंप्यूटर का महत्व", आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है। अंतिम पृष्ठ पर वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम की जानकारी के उद्देश्य से बढ़िया है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Director General of Commercial Audit, Mumbai
आवक क्र. No. 667
दि. 02/8/22

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)असम ,बेलतला ,गुवाहाटी-781029
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), ASSAM, BELTOLA, GUWAHATI–29

सं. हि.प्र./ले.प./प.पा./खंड-I/2022-23/75 दिनांक: 19.07.2022

19 JUL 2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
महाराष्ट्र, मुंबई - 440 051

विषयः - **आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के नवें (9 वें) संस्करण के ई-संस्करण की पावती।**

महोदया/महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के 9वें संस्करण की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता020 700-
फोनः ,2289/4111/12/13-033फैक्सः 4060-2289-033
ई मेलः-bresdkolkata@cag.gov.in

19 JUL 2022

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/192 दिनांकः-19.07.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वॉ तल बांद्रा कुर्ला कॉमप्लेक्स,
बांद्रा पूर्व, मुम्बई-400 051

विषयः- हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका "ज्ञानोदय" के 9वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "ज्ञानोदय" के 9वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "ज्ञानोदय" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर श्रीमती कल्याणी वेदपालक जी की यात्रावृतांत **'आसाम तथा मेघालय पर्यटन'**, श्रीमती अक्षता पावडे जी का आलेख **'हँसी-एक वरदान'**, श्रीमती अनु गोडिक जी की यात्रावृतांत **'उत्तर वाहिनी नर्मदा परिक्रमा (परिभ्रमण)'**, श्री शरद धनगर जी की कविता **'क्या जाता है साथ में'**, श्री रवि कुमार जी का आलेख **'समय के साथ बुढ़ापे की लाठी'** और श्री हरीश कुमार जी का आलेख **'कम्प्यूटर का महत्व'**, अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चत ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "ज्ञानोदय" के उज्जवल भविष्य के लिए 'आकांक्षा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

सं.हि.प्रशा.-2022-23/

प्रधाननिदेशकवाणिज्यिकलेखापरीक्षाएंव
पदेनसदस्यलेखापरीक्षाबोर्डका
कार्यालय,बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER
AUDIT BOARD,BENGALURU-560001.

दिनांक- 18.07.2022

सेवामे, 79

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
सी -25, ऑडिट भवन, 8वॉ तल बांद्रा कुर्ला,
कॉम्प्लेक्स बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 400051

विषयः-प्रशंसापत्र।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानदेय' का 9 वॉ अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाऐं।

धन्यवाद,

भवदीया,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम उ0प्र0, प्रयागराज
Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Prayagraj

प.सं. हि.अ./पत्रिका/34931

दिनांक: 19.07.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वॉ तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा
महाराष्ट्र, मुंबई - 400051

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9वें संस्करण की पावती एवं अभिमत ।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9वें संस्करण ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं । विशेषकर श्रीमती कल्याणी वंदपाठक **(आसाम तथा मेघालय पर्यटन)**, श्री आनंद कुमार सिंह **(राजभाषा हिन्दी की आत्मकथा)**, श्री शरद धनगर **(क्या जाता है साथ में)**, श्री रवि कुमार **(समय के साथ बुढ़ापे की लाठी)** एवं श्री हरीश कुमार **(कंप्यूटर का महत्व)** आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाऐं ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी

कार्यालय प्र. महालेखाकार(लेखा व हक.) पंजाब व यू.टी. चण्डीगढ़।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स 0172-2703110 दू.भा - 2702272,2702072
क्रमांकः- हिं.क./समीक्षा/4-10/22-23/214
दिनांकः- 15.07.2022

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी-25,ऑडिट भवन,8 तल,बांद्रा कुर्ला काम्प्लेक्स बांद्रा,मुंबई -400051 ।

विषय - विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 9वें अंक की पावती।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्रीमती कल्याणी वेदपाठक जी की 'आसाम तथा मेघालय पर्यटन', श्रीमती अक्षता पावड़े की 'ज़िंदगी एक सफ़र है सुहाना', श्री शरद धनगर की 'क्या जाता है साथ में', श्री रवि कुमार की 'समय के साथ बुढ़ापे की लाठी', रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीय
हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -प्रथम) म.प्र.
ऑडिट भवन,झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/ जावक- दिनांक 16/08/2022

प्रति,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /हिंदी कक्ष,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई,
सी-25, ऑडिट भवन, 8 वां तल, बांद्रा कुर्ला काम्प्लेक्स,
बांद्रा (पूर्व), मुंबई

विषय - हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9 वे संस्करण की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9 वे संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है ।

पत्रिका की साज - सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं अति प्रासंगिक ज्ञानवर्धक एवं उच्च स्तरीय हैं । श्रीमती कल्याणी वेद पाठक द्वारा लिखित लेख में "आसाम तथा मेघालय" की यात्रा के बारे में वर्णन रुचिकर है । श्री आनंद कुमार सिंह द्वारा लिखित "हिंदी राजभाषा की आत्मकथा" में हिंदी की विकास यात्रा ओर उसके प्रचार-प्रसार के संबंध में ज्ञानवर्धक जानकारी दी गयी है । श्री रवि कुमार द्वारा लिखित "समय के साथ बुढ़ापे की लाठी" एवं श्री शरद धनगर द्वारा लिखित "क्या जाता है साथ में" लेख भी सराहनीय हैं एवं शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय

Sanjeev Kumar Jhanji
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र,नागपुर 440001

संख्या.राजभाषा/22/2022-23/जा.क्र. ....

दिनांक:- /07/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई, महाराष्ट्र -400051

विषय : हिन्दी पत्रिका "'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"' के 9 वें संस्करण पर प्रतिक्रिया संबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'" के 9 वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'राजभाषा हिंदी की आत्मकथा', श्री शरद धनगर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की रचना 'क्या जाता है साथ में' तथा श्री रवि कुमार, लेखापरीक्षक का लेख 'समय के साथ बुढ़ापे की लाठी' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

WASIM MINHAS, HO(AMG-I HINDI CELL)-WM, HINDI CELL

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांकः रा.भा.अ./एच-11005/02/2022-23/ दिनांक: 18/07/2022

वरि. लेखापरीक्षा अधिकरी/प्रशासन,
महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई – 400 051

विषयः- त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9 वें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के संबंध में

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9 वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट तथा संग्रहणीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख राजभाषा संबंधित नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में यह बहुत ही उपयोगी तथा सहायक है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(बलबीर सिंह)
Balbir Singh
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या: हि.क./ बाह्य पत्रिका/2022-23/315

दिनांक:- 15.07.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
ऑडिट भवन बांद्रा, मुंबई-400051

विषय:- **हिंदी गृह-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 9वें संस्करण की पावती के सम्बन्ध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** का 9वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत आकर्षक और मनोहरी लग रहा है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है।

इस अंक में प्रकाशित लेख *"पर्यावरण"*, *"हंसी"*, *"जकात"*, *"क्या जाता है साथ में"* व *"समय के साथ बुढ़ापे की लाठी"* विशेष रुप से उल्लेखनीय है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं जो निसंदेह हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी। सभी रचनाकारों एवं संपादन मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया

13/7/22

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टैलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172-2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/168
दिनांक: 23.08.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशा.),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखा परीक्षा,
मुंबई ।

महोदय,

विषय : तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 09वें अंक के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 11.07.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 09वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती अक्षला पावडे का लेख 'जिंदगी एक सफ़र है सुहाना', श्री आनंद कुमार सिंह का लेख 'राजभाषा हिंदी की आत्मकथा', श्री हरीश कुमार का लेख 'कंप्यूटर का महत्व' एवं श्री रवि कुमार का लेख 'समय के साथ बुढ़ापे की लाठी' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह

हिंदी अधिकारी

राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयव्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालयव्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	